:: उपसंहार ::

उपसंहार

हिंदी नाटक की तरह नाटक के नायक भी धीरे धीरे विकास की ओर बढते गए हैं। संस्कृत नाटकों के नायक उच्च कुलवंशीय, आदर्श गुणों से युक्त थे। वे धीरे धीरे भारतेंदु,प्रसाद, तथा प्रसादोत्तर कालसे गुजरते हुए स्वाधीनतोत्तर काल में पहुंचकर मानवीय गुणोंवाले साधारण व्यक्ति बन गए। संस्कृत नाटकोंके आदर्श की कुर्सी पर बैठे हुए नायक धीरे धीरे एक एक सीढी उतरकर स्वाधीनतोत्तर काल नें मानवीय धरातल पर उतर आए हैं।

पाश्चात्य साहित्य में भी नाटकों के नायकों का मानवीय गुणों से युक्त होना अनिवार्य माना गया हैं। वे नाटक का नायक उच्च कुलवंशीय या राजवंशी होना अनिवार्य नही मानते। वे यथार्थ स्थिति का स्वीकार करने के पक्ष में हैं। पाश्चात्य साहित्य का ही प्रभाव प्रसादोत्तर एवं स्वाधीनत्तोत्तर नाटकों के नायक पर पडा हैं।

भारतेंदुकालीन नाटक के नायक परिस्थिति के अनुकूल आदर्श गुणों से युक्त हैं। उनके नायक भारतीय परंपरा के अनुसार आदर्श होकर भी प्रगति की ओर कदम बढाते हैं। अत: उनके नायक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहे जा सकते हैं।

प्रसाद के सामने भारतेंदु कालीन प्राचीनता के साथ पाश्चात्य साहित्य की नवीनता भी थी। यही कारण हैं, कि उनके नाटकों में नायक धीरोदात्त आदि आदर्श गुणों से युक्त होकर भी पाश्चात्य नाटकों की भाँति संघर्ष और अंतर्द्वंद्व से भी युक्त हैं। अत: उनके नायक न पूर्णत: आदर्शवादी हैं और न पूर्णत: यथार्थवादी, उनमें तो इसका मिला जुला रूप दिखाई देता हैं।

प्रसादोत्तर कालीन नाटककार नायक को परंपरागत शास्त्रीय बंधनोंसे मुक्त करने का प्रयास करते रहें। वे नायक को आदर्श के कठघरे से निकालकर

साधारण मानव के रूप में लाने की कोशिश करते रहें । अत: इस युग के नाटक के नायक जन सामान्य के अधिक निकट आने लगे ।

स्वाधीनतोत्तर हिंदी नाटकों में नायक की कल्पना पूर्णत: बदली हुई नजर आती हैं । इस काल का नायक साधारण व्यक्ति के रूप में हमारे सामने आता हैं । इस काल का नायक पूर्णत: यथार्थवादी हैं । इस काल के नायक सामान्य जनों की समस्याएँ, संघर्ष, अंतर्द्वंद्व, मानसिक घुटन, दमित वासनाएँ, कुण्ठाएँ, तनाव आदि से हमारा साक्षात्कार कराता हैं । अत: इस काल के नाटकों का नायक हमारा जाना-पहचाना, हमारे ही पडोस का लगता हैं ।

अत: निष्कर्ष रूप में हम नायक उसी को कह सकते हैं जो अनेक महत्वपूर्ण कार्यों द्वारा पाठकों को प्रभावित करता हैं । नायक उच्च कुल या राजवंशी होने पर ही महान नहीं बनता, नाटककार उसे अपनी कल्पना-शक्ति से महान रूप प्रदान करता हैं । नाटक के नायक का व्यक्तित्व ऐसा हो, जो सभी विचारधाराओं का स्वीकार करने के बावजूद भी उसकी अपनी एक विचारधारा हो ।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी के नाटकों में नायक का जो चित्रण किया गया हैं उसका अध्ययन करने पर हम कह सकते हैं, कि उनके नाटकों में नायक आदर्श गुणों से युक्त तो हैं, परंतु वे संस्कृत नायकों की भाँति केवल आदर्श का पुरस्कार करनेवाले नहीं हैं, तो वे साधारण जणों की भाँति गुण दोषों से युक्त भी हैं ।उनमें आदर्श गुणों के साथ मानवीय दोषा भी हैं । एक ओर उन्होंने आदर्श पात्रोंका निर्माण किया हैं और उन्हीं में मानवीय गुणदोषों का रोपन भी किया हैं ।

अग्निहोत्री जी ने अपने ` नेफा की एक शाम ` ` वतन की आबरू ` तथा ` विराग जल उठा ` जैसे युक्त नाटकों के नायक क्रमश: गोगो, इलाही बख्श और टीपू को देशप्रेमी तथा उदात्त गुणों से युक्त नायकों के रूप में चित्रित किया हैं । इसके पीछे उनका उद्देश्य यही रहा हैं, कि साधारण जनों में

इसी प्रकार देश प्रेम की भावनाओं का उद्भव हो तथा वे भी वतन को अपनों से अधिक महत्व दे दें। इन नायकों में उदात्त गुणों की अवतारणा करने का एक कारण यह भी हैं, कि उदात्त गुणों से ही साधारण जण प्रभावित हो सकते हैं। उदात्त गुणों से ही उनमें देशप्रेम का अंकुर फूट सकता हैं। अत: उपर्युक्त तीनों नायक अपने वतन, अपने देश के लिए जी जान से लडते हैं। उनकी हर साँस में देशप्रेम हैं। `गोगो` देश के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हैं, तो इलाही बख्श और टीपू ने वतन के लिए अपना बलिदान दे दिया हैं। उनके ये गुण किसी भी देशवासी के लिए आदरणीय एवं अनुकरणीय हैं।

`माटी जागी रे` नाटक का नायक - प्रकाश भी आदर्श गुणों से युक्त हैं। जाग्रत नवयुवकों का प्रतिनिधि पात्र प्रकाश अपने आदर्श गुणों से प्रभावित करता हुआ लोगों में नवजागृति लाता हैं। आदर्श गुणों के साथ उसमें मानवीय गुण दोष भी हैं। वह साधारण युवकों की तरह नवयुवती की तरफ आकर्षित भी होता हैं। उसमें मानवीय दोष हैं परंतु उसका अपने आप पर काबु हैं। वह चंचल प्रवृत्ति का नहीं हैं। वह मेहनती स्वभाव और ईमानदारी से अन्य पात्रों को प्रभावित करता हैं। पाठक भी इस नायक के प्रभाव में आते हैं।

शुतुरमुर्ग का नायक राजा तो स्वार्थी प्रवृत्ति के राजनीतिक पात्रों का प्रतिनिधि पात्र हैं। इस नायक में यथार्थ गुणों की अवतारणा करके नाटककार मानव में धँसी शुतुरमुर्गी प्रवृत्ति को प्रस्तुत करना चाहते हैं। नायक राजा अनैतिक ढंग से जीवन यापन करता हैं। नायक आधुनिक राजकीय नेता का सच्चा प्रतिनिधित्व करता हैं। नाटककार का उद्देश्य ऐसे नेताओं की स्वार्थी ,ढोंगी, शुतुरमुर्गी प्रवृत्ति का पर्दापाश करना ही हैं। व्यंग्यात्मक ढंग से नाटककार ने प्रस्तुत नायक को चित्रित करने में पूर्णता सफलता प्राप्त की हैं।

अनुष्ठान नाटक का नायक - पुरनचा - धीरोद्धत नायक हैं। वह क्रूर, हिंसक, निर्दयी पशुतुल्य, नराधम,हत्यारा हैं। वह कठोर भाई;क्रूर,बलात्कारी, प्रेमी;स्वार्थी,अत्याचारी,पति;निर्दयी बाप हैं। मानवीय गुणों का उसमें अभाव

हैं । पशुता का प्रतीक नायक यंत्र युग के यंत्र जैसा बना हैं । उसकी कोमल भावनाओं को मशीन युग ने तहस-नहस कर डाला हैं । वह कठोर एवं पाषाण हृदयी बनकर अन्याय,अत्याचार करनेवाला नायक बन गया हैं । परंपरा को न माननेवाला परंतु स्त्री पर परंपरागत अत्याचार करनेवाला अग्निहोत्री जी का यह नायक हमारे मन को विचार सागर में ढकेल देता हैं । लगता हैं, कि इस नाटक का नायक ` पुरुष ` भारतीय नाट्य की परंपरा का खलनायक ही हैं । उसे नायक बनाकर वर्तमान जीवन का कठोर सत्य नाटककारने प्रस्तुत किया हैं ।

` दंगा ` नाटक के नायक पंडितजी और बडे मियाँ धीरोद्धत प्रकारके नायक हैं । वे पुरातनमतवादी एवं अंधविश्वासी पात्र हैं । अपने स्वार्थ के लिए वे दूसरों का गला तक काट सकते हैं । वे दंभी तथा सीमित मनोवृत्ति के नायक हैं ।

अज्ञान एवं अंधविश्वास के कारण लोग झूठी अफवाहें सुनकर किस प्रकार बहक सकते हैं, इसका प्रतिनिधित्व बडे ही सही और यथार्थ ढंग से प्रस्तुत नायक करते हैं । नायक पंडितजी और बडे मियाँ देश की एकता में बाधा लानेवाले हिंदू तथा मुसलमानों के सच्चे प्रतिनिधि पात्र हैं ।